अध्याय 02

व्यापार से साम्राज्य तक

मुगल बादशाहों में औरंगजेब आखिरी शक्तिशाली बादशाह थे। उन्होंने वर्तमान भारत के एक बहुत बड़े हिस्से पर नियंत्रण स्थापित कर लिया था। 1707 में उनकी मृत्यु के बाद बहुत सारे मुगल सूबेदार और बड़े-बड़े जमींदार अपनी क्षेत्रीय रियासतें कायम कर ली थीं। दिल्ली अब प्रभावी केन्द्र के रूप में नहीं रह सकी।

अरब के व्यापारी भारतीय वस्तुओं को यूरोप के बाजार में और यूरोपीय वस्तुओं को भारतीय बाजार में बेचते थे। भारतीय सूती व रेशमी कपड़े, मसाला आदि की माँग यूरोपीय देशों में बहुत थी। परन्तु यूरोपियों को इन वस्तुओं के लिए ऊँची कीमत देनी पड़ती थी और यूरोपीय व्यापारियों की बजाय अरबी व्यापारियों को इससे अधिक लाभ होता था। यूरोप के व्यापारियों ने भारत से प्रत्यक्ष व्यापार करने के लिए लाल सागर से होते हुए स्थल मार्ग को अपनाया था। परंतु इसमें उन्हें कई कठिनाइयों का सामना करना पड़ता था।

© JCERT not to be republished

पूरब में ईस्ट इंडिया कम्पनी का आना

सन् 1600 में ईस्ट इंडिया कम्पनी ने इंग्लैण्ड की महारानी एलिजाबेथ प्रथम से चार्टर अर्थात् इजाजतनामा हासिल कर लिया जिससे कम्पनी को पूरब से व्यापार करने का एकाधिकार मिल गया। इस इजाजतनामे का मतलब यह था कि इंग्लैण्ड की कोई और व्यापारिक कम्पनी इस इलाके में ईस्ट इंडिया कम्पनी से होड़ नहीं कर सकती थी। लेकिन यह शाही दस्तावेज दूसरी यूरोपीय ताकतों को पूरब के बाजारों में आने से नहीं रोक सकता था। जब तक इंग्लैंड के जहाज अफ्रीका के पश्चिम तट को छूते हुए केप ऑफ गुड होप का चक्कर लगाकर हिन्द महासागर पार करते तब तक पुर्तगालियों ने भारत के पश्चिमी तट पर अपनी उपस्थिति दर्ज करा दी थी।

मध्यकाल में यूरोप से कई यात्री और अन्वेषक भारत की खोज में आए थे। पुर्तगाल का वास्कोडिगामा सर्वप्रथम 1498 में भारत पहुँचा। वह दक्षिण अफ्रीका के उत्तमाशा अंतरीप होते हुए कालीकट बंदरगाह (पश्चिमी भारत) पहुँचा और वहाँ के शासक की अनुमति मिलने पर यहाँ व्यापार करना आरम्भ किया। इसके बाद पुर्तगालियों ने पश्चिम भारत में विशेषकर गोवा में बसना आरम्भ किया। उन्होंने व्यापार के साथ इस क्षेत्र में मिशनरी कार्य भी किया था। उन्होंने राजनीतिक प्रभुत्व भी स्थापित करना चाहा, परन्तु कर नहीं पाए। अन्य इंग्लैण्ड (अंग्रेज) भी व्यापार के उद्देश्य से भारत पहुँचे। सभी यूरोपीय व्यापारिक कम्पनियाँ भारतीय सूती तथा रेशमी कपड़े, नील एवं शोरा तथा गरम मसालों का व्यापार करना चाहती थी, क्योंकि इन वस्तुओं की माँग यूरोपीय बाजार में अत्यधिक थी। यूरोपीय कम्पनियों के बीच इस बढ़ती प्रतिस्पर्धा से भारतीय बाजारों में इन चीजों की कीमतें बढ़ने लगीं और उनसे मिलने वाला मुनाफा गिरने लगा। अब इन व्यापारिक कम्पनियों के फलने-फूलने का एक रास्ता था कि वे अपनी प्रतिस्पर्धा कम्पनियों को खत्म कर

दे। लिहाजा बाजारों पर कब्जे की इस होड़ ने व्यापारिक कम्पनियों के बीच लड़ाइयों की शुरूआत कर दी। यह व्यापार हथियारों की मदद से चल रहा था और व्यापारिक चौकियों और किलेबंदी के जरिए सुरक्षित रखा जाता था।

अपनी बस्तियों को किलेबंद करने और व्यापार में मुनाफा कमाने की इन कोशिशों के कारण स्थानीय शासकों से भी टकराव होने लगे। इस प्रकार व्यापार और राजनीति को एक दूसरे से अलग रखना कम्पनी के लिए मुश्किल होता जा रहा था।

वस्तुनिष्ठ प्रश्न

(1) ईस्ट इंडिया कम्पनी कब स्थापित हुई—

(क) 1400 (ख) 1500 (ग) 1600 (घ) 1700

(2) भारत में आने वाला सर्वप्रथम यूरोपीय देश कौन था ?

(क) स्पेन (ख) पुर्तगाल (ग) फ्रांस (घ) इंग्लैण्ड

(3) पुर्तगाल का वास्कोडिगामा कब भारत पहुँचा—

(क) 1496 (ख) 1497 (ग) 1498 (घ) 1499

(4) वास्कोडिगामा सर्वप्रथम भारत के किस स्थान पहुँचा।

(क) सूरत (ख) कालीकट (ग) कलकत्ता (घ) मछलीपट्टनम

(5) सर्वप्रथम पुर्तगालियों ने कहाँ बसना आरम्भ किया।

(क) सूरत (ख) बम्बई (ग) गोवा (घ) विशाखापत्तनम

उत्तर—(1) ग, (2) ख, (3) ग, (4) ख, (5) ग।

भारत में कम्पनी के व्यापार का विस्तार

टॉमस रो नामक एक अंग्रेज व्यापारी ने मुगल सम्राट जहाँगीर से भारत में अंग्रेजों के व्यापार के लिए अनुमति प्राप्त की थी। अँग्रेजों ने सर्वप्रथम मसूलीपटनम् (मछलीपट्टनम्) में अपनी फैक्ट्री खोली। उस समय अंग्रेजों की फैक्ट्री उत्पादन स्थल नहीं होती थी। यह निर्यात की जानेवाली वस्तुओं का गोदाम होती थी। गोदाम के साथ यहाँ अँग्रेजों का व्यापारिक दफ्तर भी होता था जिनमें कम्पनी के अफसर बैठते थे। बाद में इसके चारों ओर अँग्रेजों ने रहने के लिए बस्तियाँ बनाई। 1698 में कम्पनी ने सुतानाती, कालीकता और गोविन्दपुर नामक तीन गाँवों की जमींदारी खरीद ली। मुगल सम्राट औरंगजेब से बिना चुंगी दिए व्यापार करने का फरमान (सरकारी आज्ञा) भी प्राप्त किया। फरमान द्वारा यह अधिकार केवल कम्पनी के व्यापार के लिए दिया गया था, परन्तु उसके कर्मचारियों ने इसका उपयोग अपने निजी व्यापार में किया जिससे बंगाल में राजस्व वसूली बहुत कम हो गई।

JEPC Reference Book for Free Distribution : 2022-23

व्यापार से युद्धों तक

अठारहवीं सदी की शुरूआत में कम्पनी और बंगाल, के नवाबों का टकराव काफी बढ़ गया था। मुर्शिद कुली खान के बाद अली वर्दी खान और उसके बाद सिराजुद्दौला बंगाल के नवाब बने। ये सभी शक्तिशाली शासक थे। उन्होंने कम्पनी को रियायते देने से मना कर दिया। व्यापार का अधिकार देने के बदले कम्पनी से नजराने माँगे, उसे सिक्के ढालने का अधिकार नहीं दिया और उसके किलेबंदी को बढ़ाने से रोक दिया। कम्पनी पर धोखाधड़ी का आरोप लगाते हुए उन्होंने दलील दी कि उसकी वजह से बंगाल सरकार की राजस्व वसूली कम होती जा रही है और नवाबों की ताकत कमजोर पड़ रही है। कम्पनी टैक्स चुकाने को तैयार नहीं थी। उसके अफसरों ने अपमानजनक चिट्‌ठियाँ लिखीं और नवाबों व उनके अधिकारियों को अपमानित करने का प्रयास किया। ये टकराव दिनोदिन गम्भीर होते गए अन्ततः इन टकरावों की परिणति प्लासी के प्रसिद्ध युद्ध के रूप में हुई।

प्लासी का युद्ध

1756 में अलीवर्दी खान की मृत्यु के बाद सिराजुद्दौला बंगाल के नवाब बने। कम्पनी को सिराजुद्दौला की ताकत से काफी भय था। सिराजुद्दौला की जगह कम्पनी एक ऐसा कठपुतली नवाब चाहती थी जो उसे व्यापारिक रियायतें और अन्य सुविधाएँ देने में आनाकानी न करे। कम्पनी ने प्रयास किया कि सिराजुद्दौला के प्रतिद्वंद्वियों में से किसी को नवाब बना दिया जाए। कम्पनी को कामयाबी नहीं मिली। जवाब में सिराजुद्दौला ने हुक्म दिया कि कम्पनी उनके राज्य के राजनीतिक मामलों में टांग अड़ाना बंद करे, किलेबंदी रोके और बाकायदा राजस्व चुकाए। जब दोनों पक्ष पीछे हटने को तैयार नहीं हुए तो अपने 30,000 सिपाहियों के साथ नवाब ने कासिम बाजार में स्थित इंगलिश फैक्ट्री पर हमला बोल दिया। नवाब की फौजों ने कम्पनी के अफसरों को गिरफ्तार कर लिया, गोदाम पर ताला लगा दिया, अंग्रेजों के हथियार छीन लिए और अंग्रेज जहाजों को घेर लिया।

© JCERT not to be republished

कलकत्ता के हाथ से निकल जाने की खबर सुनने पर मद्रास में तैनात कम्पनी के अफसरों ने भी रॉबर्ट क्लाइव के नेतृत्व में सेना को रवाना कर दिया। इस सेना को नौसैनिक बेड़े की मदद भी मिल रही थी। आखिरकार 23 जून 1757 की रॉबर्ट क्लाइव ने प्लासी के मैदान में सिराजुद्दौला के खिलाफ कम्पनी की सेना का नेतृत्व किया। अंग्रेजों को सफलता मिली और सिराजुद्दौला विशाल सेना रखने के बावजूद भी हार गया। इसका कारण यह था कि सिराजुद्दौला को अपने सेनापति मीरजाफर की सहायता नहीं मिली। नवाब पकड़ा गया और मार डाला गया।

अंग्रेजों ने मीरजाफर को बंगाल का नया नवाब बनाया। नए नवाब ने अंग्रेजों को धन के अतिरिक्त 24 परगना की जमींदारी तथा मुफ्त व्यापार का अधिकार दिया। व्यक्तिगत तौर पर क्लाइव को 20 लाख रूपया प्राप्त हुआ। अन्य अंग्रेजों को भी मीरजाफर ने कीमती उपहार दिया। बंगाल में सभी फ्रांसीसी क्षेत्र अंग्रेजों को प्राप्त

हुए। कम्पनी के कर्मचारियों को उनके व्यक्तिगत व्यापार में दस्तक का उपयोग करने का अधिकार मिला।

प्लासी का युद्ध वास्तविक युद्ध नहीं था, क्योंकि अंग्रेजों ने इसे धोखे से जीता था। फिर भी, भारतीय इतिहास में प्लासी का युद्ध एक महत्वपूर्ण घटना है। इस युद्ध के पश्चात् भारत में अंग्रेजों साम्राज्य का विकास हुआ अब नवाब उसके हाथ की कठपुतली बन गया। प्लासी की विजय में कम्पनी को व्यापारिक संस्था से राजनीतिक शक्ति बना दिया।

रिक्त स्थानों की पूर्ति करें

(1) .... नामक व्यक्ति ने जहाँगीर से अंग्रेजों के व्यापार के लिए अनुमति प्राप्त की थी।

(2) अंग्रेजों ने सर्वप्रथम .... में अपनी फैक्ट्री खोली।

(3) .... ई. में कम्पनी ने सुतानाती, कालीकता और गोविन्दपुर नामक तीन गाँव की जमींदारी प्राप्त की।

(4) अलीवर्दी खान की मृत्यु के बाद .... बंगाल के नवाब बने।

(5) प्लासी का युद्ध .... को हुआ।

(6) प्लासी युद्ध में .... ने अंग्रेजों की सेना का नेतृत्व किया

(7) प्लासी के युद्ध के बाद .... को बंगाल का नया नवाब बनाया गया।

उत्तर—(1) टॉमस से, (2) मसूलीपट्टनम्, (3) 1698, (4) सिराजुद्दौला, (5) 23 जून, 1757, (6) रॉबर्टक्लाइव (7) मीरजाफर।

कम्पनी का फैलता शासन/साम्राज्य

कम्पनी अभी भी शासन की जिम्मेदारी सँभालने को तैयार नहीं थी। उसका मूल उद्देश्य तो व्यापार को फैलाना था। अगर यह काम स्थानीय शासकों की मदद से बिना लड़ाई लड़े ही किया जा सकता था तो किसी राज्य को सीधे अपने कब्जे में लेने की क्या जरूरत थी।

जल्द ही कम्पनी को एहसास होने लगा कि यह रास्ता भी आसान नहीं है। कठपुतली नवाब भी हमेशा कम्पनी के इशारों पर नहीं चलते थे। कुछ ही समय बाद मीरजाफर तथा कम्पनी के मध्य मतभेद बढ़ गया। कम्पनी के ऊपर और अधिक नियंत्रण कर दिया। धन की माँग के साथ कम्पनी ने नवाब से बर्दवान और नादिया प्रांतों की माँग की। उसने कम्पनी की माँगों को पूरा करने में असमर्थता दिखाई और डचों के साथ मिल गया। इस कारण अंग्रेजों ने उसके दामाद मीरकासिम को नया नवाब बना दिया। बदले में कम्पनी को मीरकासिम से बर्दवान, मिदनापुर तथा चटगाँव प्राप्त हुआ।

मीरकासिम एक कठपुतली शासक नहीं बनना चाहता था। उसने अंग्रेजों से दूर मुंगेर (बिहार) को अपनी राजधानी बनाया और अपनी सेना को यूरोपीय पद्धति से प्रशिक्षित किया। मीरकासिम का मुंगेर का किला

© JCERT not to be republished

आज भी मौजूद है। अपनी आर्थिक स्थिति को सुधारने के लिए उसने अंग्रेजों पर नियंत्रण लगाने का प्रयास किया। दस्तक के अधिकार से कम्पनी के कर्मचारियों को व्यक्तिगत लाभ हो रहा था, परन्तु सरकारी खजाना पर इसका प्रतिकूल प्रभाव पड़ रहा था। मीरकासिम ने इसका विरोध करते हुए कम्पनी पर व्यापारिक प्रतिबंध लगा दिया। अंग्रेज ने मीरकासिम के साथ युद्ध किया और उसे 1763 में हरा दिया। अपनी राजधानी छोड़कर मीरकासिम अवध (वर्तमान उत्तर प्रदेश) के नवाब शुजाउद्दौला से जा मिला। वहाँ मुगल बादशाह शाहआलम द्वितीय भी मौजूद था। तीनों ने मिलकर अंग्रेज को बंगाल से निकालने का प्रयाय किया। इस प्रकार तीन भारतीय शक्तियों तथा अंग्रेजों के बीच बक्सर का युद्ध (1764) हुआ। इस युद्ध में अंग्रेजों की जीत ने बंगाल पर उनका आधिपत्य स्थापित कर दिया। मीरजाफर को दुबारा नवाब बनाया गया।

बक्सर के युद्ध का महत्व

प्लासी के युद्ध के पश्चात् क्लाइव इंग्लैण्ड चला गया था। बक्सर के युद्ध के पश्चात् उसे पुनः भारत भेजा गया। उसने हारे हुए तीनों शासकों के साथ अलग-अलग संधियाँ की और कम्पनी शासन को बंगाल में सुदृढ़ किया। इस युद्ध के पश्चात बंगाल का नवाब पूर्ण रूप से कम्पनी के अधीन हो गया।

क्लाइव ने इलाहाबाद की दूसरी संधि (1765) शाहआलम-II के साथ की। इसके अनुसार अवध से उसे कड़ा और इलाहाबाद प्राप्त हुआ। कम्पनी ने उसे अपने संरक्षण में लिया तथा वार्षिक 26 लाख रूपया पेंशन देने का वादा किया। शाहआलम ने कम्पनी को बंगाल, बिहार तथा उड़ीसा की दीवानी का अधिकार दिया।

दीवानी मिलने पर यहीं से प्राप्त धन से कम्पनी व्यापार करने लगी। इसके पूर्व भारी मात्रा में सोना तथा चाँदी देकर भारतीय वस्तुएँ खरीदती थी। इंग्लैंड का सोना-चाँदी भारत आने लगा था, जिसका विरोध अंग्रेजों ने किया था। ब्रिटिश सरकार ने भी इसका विरोध किया था। परन्तु दीवानी ने इंगलैण्ड से सोना-चाँदी आने की प्रक्रिया को रोक दिया। दीवानी से मिले धन से कम्पनी सस्ती कीमत पर भारतीय उत्पादों को खरीदकर इंग्लैण्ड भेजने लगी और मुनाफा कमाने लगी।

बक्सर के युद्ध को एक निर्णायक युद्ध माना गया है। एक व्यापारिक कम्पनी से बंगाल में वह एक राजनीतिक शक्ति बन गई। बंगाल का नवाब उसकी कठपुतली, अवध का नवाब एक कृतज्ञ अधीनस्थ तथा भारत का सम्राट उसका पेंशनभोगी बन गया, इलाहाबाद तक कम्पनी के प्रभाव का विस्तार और बंगाल से दिल्ली पहुँचने का मार्ग आसान हो गया। अब उत्तर भारत में कम्पनी को चुनौती देने वाला कोई नहीं रहा। इस युद्ध के बाद अवध तथा बंगाल के नवाबों ने भविष्य में कम्पनी को भी चुनौती नहीं दी जिससे इन क्षेत्रों पर इसका नियंत्रण मजबूत होता गया।

यदि हम 1757 से 1857 के बीच ईस्ट इंडिया कम्पनी द्वारा भारतीय राज्यों पर कब्जे की प्रक्रिया को देखे तो कुछ महत्वपूर्ण बातें सामने आती हैं। किसी अनजान इलाके में कम्पनी ने सीधे सैनिक हमला प्रायः नहीं

© JCERT not to be republished

किया। इसने किसी भी भारतीय रियासत का अधिग्रहण करने से पहले विभिन्न राजनीतिक, आर्थिक और कुटनीतिज्ञ साधनों का इस्तेमाल किया।

बक्सर की लड़ाई (1764) के बाद कम्पनी ने भारतीय रियासतों में रेजिडेंट तैनात कर दिये। ये कम्पनी के राजनीतिक या व्यावसायिक प्रतिनिधि होते थे। उनका काम कम्पनी के हितों की रक्षा करना और उन्हें आगे बढ़ाना था। रेजिडेंट के माध्यम से कम्पनी के अधिकारी भारतीयों राज्यों के भीतरी मामलों में भी दखल देने लगे थे। अगला राजा कौन होगा, किस पद पर किसको बिठाया जाएगा, इस तरह की चीजें भी कम्पनी के अफसर ही तय करना चाहते थे। कई बार कम्पनी ने रियासतों पर ''सहायक संधि'' भी थोप दी। जो रियासत इस बंदोबस्त को मान लेती थी उसे अपनी स्वतंत्र सेनाएँ रखने का अधिकार नहीं रहता था। उसे कम्पनी की तरफ से सुरक्षा मिलती थी और ''सहायक सेना'' के रखरखाव के लिए वह कम्पनी को पैसा देती थी। अगर भारतीय शासक रकम अदा करने में चूक जाते थे तो जुर्माने के तौर पर उनका इलाका कम्पनी अपने कब्जे में ले लेती थी। अवध, पेशवा, सिंधिया, भोंसले, हैदराबाद, तंजौर, जयपुर, जोधुपर, बूँदी, भरतपुर आदि इस संधि के अंतर्गत कम्पनी के अधीन हो गए।

© JCERT not to be republished

मैसूर की विजय

जब कम्पनी को अपने राजनीतिक और आर्थिक हितों पर खतरा दिखाई दिया तो कम्पनी ने प्रत्यक्ष सैनिक टकराव का रास्ता भी अपनाया। दक्षिण भारतीय राज्य मैसूर के उदाहरण से यह बात समझी जा सकती है। जिस समय बंगाल में अंग्रेजी प्रभुत्व का विस्तार हो रहा था उस समय दक्षिण में हैदर अली (शासनकाल 1761 से 1787) और उसके विख्यात पुत्र टीपू सुल्तान (शासनकाल 1782-1799) जैसे शक्तिशाली शासकों के नेतृत्व में मैसूर काफी ताकतवर हो चुका था। मालाबार तट पर होने वाला व्यापार मैसूर रियासत के नियंत्रण में था। जहाँ से कम्पनी काली मिर्च और इलायची खरीदती थी। 1785 में टीपू सुल्तान ने अपनी रियासत में पड़ने वाले बंदरगाहों से चंदन की लकड़ी, काली मिर्च और इलायची का निर्यात रोक दिया। सुल्तान ने स्थानीय सौदागरों को भी कम्पनी के साथ कारोबार करने से रोक दिया था। टीपू सुल्तान ने भारत में रहने वाले फ्रांसीसी व्यापारियों से घनिष्ठ संबंध विकसित किए और उसकी मदद से अपनी सेना का आधुनिकीकरण किया।

सुल्तान के इन कदमों से अंग्रेज आग-बबूला हो गए। फलस्वरूप मैसूर के साथ चार बार जंग हुई। (1767-69, 1780-84, 1790-92, और 1799) श्रीरंगपट्टम की आखिरी जंग में कम्पनी को सफलता मिली। अपनी राजधानी की रक्षा करते हुए टीपू सुल्तान मारे गए और मैसूर का राजकाज पुराने वाडियार राजवंश के हाथों में सौंप दिया गया। इसके साथ ही मैसूर पर भी सहायक संधि सौंप दी गई। बंगाल के समान मैसूर पर कम्पनी का शासन स्थापित हो गया।

मराठों से लड़ाई/मराठों के साथ युद्ध

पश्चिम भारत में शिवाजी ने मराठों को संगठित कर शक्तिशाली बनाया था। 1707 के बाद मुगल सम्राटों की दुर्बलता के कारण मराठों ने उत्तर भारत की राजनीति में हस्तक्षेप करना आरम्भ कर दिया और दिल्ली पर नियंत्रण स्थापित करने का भी प्रयास किया। परन्तु पानीपत की तीसरी लड़ाई (1761) में हार जाने पर उनका यह सपना अधूरा रह गया। इस हार ने उनकी शक्ति को कमजोर कर दिया।

अठारहवीं शताब्दी के आखिर से कम्पनी मराठों की ताकत को भी काबू और खत्म करने के बारे में सोचने लगी थीं मराठा राज्यों की बागडोर सिंधिया, होल्कर, गायकवाड़ और भोंसले जैसे—अलग-अलग राजवंशों के हाथों में थी। ये सारे सरदार एक पेशवा (सर्वोच्च मंत्री) के अंतगर्त एक कन्फेडरेसी (राज्यमण्डल) के सदस्य थे। पेशवा इस राज्यमण्डल का सैनिक और प्रशासकीय प्रमुख होता था और पुणे में रहता था। महाद जी सिंधिया और नाना फड़नवीस अठारवीं सदी के आखिर के दो प्रसिद्ध मराठा यौद्धा और राजनीतिज्ञ थे।

एक के बाद कई युद्धों में कम्पनी ने मराठों को घुटने टेकने पर मजबूर कर दिया। पहला युद्ध 1782 में सालबाई संधि के साथ खत्म हुआ। दूसरा अंग्रेज मराठा युद्ध (1803-05) कई मोर्चो पर लड़ा गया। 1817-19 के तीसरे अंग्रेज-मराठा युद्ध में मराठों की ताकत को पूरी तरह कुचल दिया गया। पेशवा को पुणे से हटाकर कानपुर के पास बिठूर में पेंशन पर भेज दिया गया। अब विंध्य के दक्षिण में स्थित पूरे भू-भाग पर कम्पनी का नियंत्रण हो चुका था।

इस प्रकार व्यापार के उद्देश्य से भारत आई इंगलिश ईस्ट-इण्डिया कम्पनी ने भारतीय राज्यों में फूट तथा संघर्ष का लाभ उठाया और 19वीं सदी के आरम्भ तक अनेक राज्यों पर प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष अधिकार स्थापित कर लिया।

© JCERT not to be republished

वस्तुनिष्ठ प्रश्न

सही उत्तर का संकेताक्षर (क, ख, ग, घ) लिखे।

(1) अंग्रेजों से दूरी बनाने हेतु मीरकासिम ने अपनी नई राजधानी कहाँ बनाई ?

(क) मुगलसराय (ख) मुंगेर (ग) मोकामा (घ) मिदनापुर

(2) 1763 में अंग्रेजों से हारने के बाद मीरकासिम कहाँ पहुँचा—

(क) बक्सर (ख) लखनऊ (ग) अवध (घ) बर्दबान

(3) बक्सर का युद्ध किस वर्ष हुआ—

(क) 1761 (ख) 1762 (ग) 1763 (घ) 1764

(4) भारतीय शक्तियों मीरकासिम अवध के नवाब शुजाउद्दौला एवं मुगल बादशाह शाहआलम द्वितीय को किस युद्ध में अंग्रेजों ने परास्त किया—

(क) खानवा के युद्ध में (ख) पानीपत के युद्ध में

(ग) बक्सर के युद्ध में (घ) प्लासी के युद्ध में

(5) मालाबार तट पर से होने वाला व्यापार किस रियासत के नियंत्रण में था—

(क) सिंधिया (ख) होल्कर (ग) मैसूर (घ) अवध

(6) पानीपत की तीसरी लड़ाई कब हुई ?

(क) 1760 (ख) 1761 (ग) 1762 (घ) 1764

(7) किस शासक ने फ्रांसीसी के मदद से अपनी सेना का आधुनिकीकरण किया—

(क) टीपू सुल्तान (ख) हैदरअली (ग) मीरकासिम (घ) शुजाउद्दौला

उत्तर—(1) ख, (2) ग, (3) घ, (4) ग, (5) ग, (6) ख, (7) क।

© JCERT not to be republished

नए शासन की स्थापन

गवर्नर-जनरल वॉरेन हेस्टिंग्स (1773-1785) उन बहुत सारे महत्वपूर्ण व्यक्तियों में से था जिन्होंने कम्पनी की ताकत फैलाने में अहम भूमिका अदा की थी। वॉरेन हेस्टिंग्स के समय तक आते-आते कम्पनी न केवल बंगाल बल्कि बम्बई और मद्रास में भी सत्ता हासिल कर चुकी थी। ब्रिटिश इलाके मौटे तौर पर प्रशासकीय इकाईयों में बँटे हुए थे। जिन्हें प्रेजिडेंसी कहा जाता था। उस समय तीन प्रेजिडेंसी थी- बंगाल, मद्रास और बम्बई। हरेक का शासन गर्वनर के पास होता था। सबसे ऊपर गर्वनर-जनरल होता था।

1772 में एक नयी न्याय व्यवस्था स्थापित की गई। इस व्यवस्था में प्रावधान किया गया कि हर जिले में दो अदालतें होंगी। फौजदारी अदालत और दीवानी अदालत। दीवानी अदालतों के मुखिया यूरोपीय जिला कलेक्टर होते थे। मौलवी और हिन्दू पंडित उनके लिए भारतीय कानूनों की व्याख्या करते थे। फौजदारी अदालतें अभी भी काजी और मुफ्ती के ही अंतर्गत थीं। लेकिन वे भी कलेक्टर की निगरानी में काम करते थे।

वॉरेन हेस्टिंग्स ने उस समय भारत में प्रचलित कानूनों की अलग-अलग व्याख्या को समाप्त करने के लिए पंडितों की सहायता से हिन्दू कानूनों का संकलन करवाया। इसी प्रकार मुस्लिम कानूनों का भी संकलन करवाया। दोनों कानूनों का अंग्रजों अनुवाद भी करवाया गया। रेग्यूलेटिंग ऐक्ट (1773) द्वारा कलकत्ता में एक सर्वोच्च न्यायालय तथा सदर निजामत अदालत की भी स्थापना की गई।

भारतीय जिले में कलेक्टर का सबसे बड़ा आदेश होता था। उसका मुख्य काम लगान और कर इकट्ठा करना तथा न्यायाधीशों, पुलिस पदाधिकारियों व दारोगा की सहायता से जिले में कानून-व्यवस्था बनाए रखना होता

था। उसका कार्यालय–कलेक्टरेट सत्ता और संरक्षण का नया केन्द्र बन गया था जिसने पुराने सत्ता केन्द्र को हाशिये पर ढकेल दिया।

कम्पनी की फौज

कम्पनी के साथ भारत में शासन और सुधार के नए विचार आए लेकिन उसकी असली सत्ता सैनिक ताकत में थी। मुगल फौज मुख्य रूप से घुड़सवार और पैदल सेना थी। उन्हें तीरंदाजी और तलवारबाजी का प्रशिक्षण दिया जाता था। सेना में सवारों का दबदबा रहता था और मुगल साम्राज्य को एक विशाल पेशेवर प्रशिक्षण वाली पैदल सेना की जरूरत महसूस नहीं होती थी। ग्रामीण इलाकों में सशस्त्र किसानों की बड़ी संख्या थी। स्थानीय जमींदार मुगलों को जरूरत पड़ने पर पैदल सिपाही मुहैया कराते थे। अठारहवीं सदी में जब अंग्रेज किसानों को औपचारिक रूप से भर्ती करके उन्हें पेशेवर सैनिक प्रशिक्षण दिया जाने लगा तो यह सूरत बदलने लगी। जैसे–जैसे युद्ध तकनीक बदलने लगी कम्पनी की सेना में घुड़सवार टुकड़ियों की जरूरत कम होती गई। अब सिपाही मस्केट (तोड़ेदार बंदूक) और मैचनलॉक (शुरूआती दौर की बंदूक जिसमें बारूद की माचिस से चिंगारी दी जाती थी।) से लैस होते थे। कम्पनी की सेना के सिपाहियों को बदलती सैनिक आवश्यकताओं का ध्यान रखना पड़ता था और अब उसकी पैदल टुकड़ी ज्यादा महत्वपूर्ण होती जा रही थी। सिपाहियों को अब यूरोपीय ढंग का प्रशिक्षण अभ्यास और अनुशासन सिखाया जाने लगा। अब उनका जीवन पहले से भी ज्यादा नियंत्रित था। सैनिक सुधार से कम्पनी को कई समस्याओं का भी सामना करना पड़ा। अंग्रेज कई बार जाति और समुदाय की भावनाओं को नजरअंदाज कर देते थे। भला लोग अपनी जातीय और धार्मिक भावनाओं को इतनी आसानी से कैसे छोड़ सकते थे ? क्या वे खुद से अपने समुदाय को सदस्य मानने की बजाय सिर्फ सिपाही मान सकते थे ?

अपने जीवन और अपनी पहचान, यानी वे कौन हैं, इस बात के अहसास में जो बदलाव आ रहे थे, उनको सिपाहियों ने किस तरह ग्रहण किया उन सभी समेहित संवेदनाओं की परिणति हमें 1857 के सिपाही विद्रोह जिसे वृहत रूप में हम भारत के स्वतन्त्रता के प्रथम विद्रोह में देखते हैं।

ईस्ट इंडिया कम्पनी एक व्यापारिक कम्पनी से बढ़ते–बढ़ते एक भौगोलिक औपनिवेशिक शक्ति बन गई। उन्नीसवीं सदी की शुरूआत में यह प्रक्रिया और तेज हुई। तब तक समुद्र मार्ग से भारत पहुँचने में 6-8 माह का समय लग जाता था। भाप से चलने वाले जहाजों ने यह यात्रा तीन हफ्तों में समेट दी। इसके बाद तो ज्यादा से ज्यादा अंग्रेज और उनके परिवार भारत जैसे दूर देश में आने लगे।

1857 तक भारतीय उपमहाद्वीप के 63 प्रतिशत भूभाग और 78 प्रतिशत आबादी पर कम्पनी का सीधा शासन स्थापित हो चुका था जबकि देश के शेष भूभाग और आबादी पर कम्पनी का अप्रत्यक्ष प्रभाव था। इस प्रकार व्यावहारिक स्तर पर ईस्ट इंडिया कम्पनी पूरे भारत को अपने नियंत्रण में ले चुकी थी।

© JCERT not to be republished

स्मरणीय

- अंग्रेज व्यापार के लिए भारत आए थे। 1857 तक उन्होंने भारत पर अपना प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष नियंत्रण स्थापित कर लिया।
- आरम्भ में अरब के व्यापारी भारत और यूरोप के मध्य व्यापार करते।
- सभी यूरोपीय व्यापारिक कम्पनियाँ भारतीय सूती तथा रेशमी कपड़े नील शोरा तथा गरम मसालों का व्यापार करने आए। इन सभी में ईस्ट इंण्डिया कम्पनी सफल हुई।
- टॉमस रो ने मुगल सम्राट जहाँगीर से भारत में अंग्रेजों के व्यापार के लिए अनुमति प्राप्त की थी।
- 1698 में कम्पनी ने सुतानाती, कालीकता और गोविन्दपुर की जमींदारी खरीद ली।
- 1757 में रॉबर्ट क्लाइव ने प्लासी के मैदान में सिराजुद्दौला को हराया, मीरजाफर को बंगाल का नया नवाब बनाया गया।
- 1764 में कम्पनी ने बक्सर के युद्ध में तीन भारतीय शासक शाहआलम द्वितीय, सिराजुद्दौला और मीरकासिम की संयुक्त सेना को हराया।
- कम्पनी ने हैदर अली तथा टीपू सुल्तान के साथ युद्ध कर मैसूर को अपने अधीन कर लिया।
- मराठों को पराजित कर पश्चिम भारत में कंपनी का प्रभाव बढ़ा। युद्ध के अतिरिक्त कम्पनी ने विलय की नीति एवं सहायक संधि के द्वारा अपना राज्य विस्तार किया।
- ब्रिटिश शासन तीन प्रशासकीय इकाई-बंगाल, मद्रास और बम्बई में बँटे हुए थे।
- भारत के प्रथम गवर्नर जनरल वारेन हेस्टिंग्स ने महत्वपूर्ण राजस्व, न्यायिक तथा सैनिक सुधार किए।
- कलेक्टरेट, सत्ता और संरक्षण का नया केन्द्र बन गया जिसने पुराने सत्ता केन्द्र को हाशिये पर ढकेल दिया।

© JCERT not to be republished

वस्तुनिष्ठ प्रश्न

(क) सही उत्तर का संकेताक्षर (क, ख, ग, घ) लिखे।

(1) भारत में कम्पनी का शासन कब स्थापित हुआ ?

(क) 1856 (ख) 1757 (ग) 1858 (घ) 1859

(2) टॉमस रो कौन था ?

(क) कैप्टन (ख) वैज्ञानिक (ग) यात्री (घ) व्यापारी

(3) सिराजुद्दौला किसका उत्तराधिकारी था ?

(क) मुर्शिदकुली खाँ (ख) अलीवर्दी खाँ (ग) जहाँगीर (घ) औरंगजेब

(4) दस्तक क्या था ?

(क) उपहार (ख) निमंत्रण (ग) किला (घ) अज्ञापत्र

(5) प्लासी के युद्ध के पश्चात् बंगाल का नवाब कौन बना ?

(क) मीरकासिम (ख) सिराजुद्दौला (ग) मीरजाफर (घ) भुजाउदौला

(6) 1792 में बंगाल मैसूर युद्ध के बाद कौन संधि हुई थी ?

(क) मंगलौर की संधि (ख) ट्रावनकोर की संधि

(ग) त्रिचनापल्ली की संधि (घ) श्रीरंगपट्टनम् की संधि

(7) इनमें किसने सहायक संधि स्वीकार की थी ?

(क) हैदराबाद (ख) मद्रास (ग) पंजाब (घ) कश्मीर

(8) डलहौजी ने किस नीति का पालन किया—

(क) सहायक संधि (ख) विलय (ग) दैध शासन (घ) राजस्व वसूली

(9) वारेन हेस्टिंग्स द्वारा किए गए सुधारों में कौन सा सुधार अधिक महत्वूपर्ण है ?

(क) प्रशासनिक (ख) न्यायिक (ग) सैनिक (घ) राजस्व

(10) ब्रिटिश इलाके कितने प्रशासकीय इकाईयों में बँटे हुए थे ?

(क) दो (ख) तीन (ग) चार (घ) पाँच

(ख) रिक्त स्थानों की पूर्ति करें—

(1) भारत और यूरोप के मध्य अरब के .... व्यापार करते थे।

(2) इंगलिश ईस्ट इंडिया कम्पनी एक .... कम्पनी थी।

(3) दस्तक एक सरकारी .... था।

(4) .... ने मुँगेर (बिहार) को अपनी राजधानी बनाई

(5) बंगाल में कम्पनी की फैक्ट्री सर्वप्रथम .... में स्थापित हुई थी।

(6) प्लासी से अधिक .... बक्सर का युद्ध थी।

(7) कम्पनी को .... की संधि से दीवानी का अधिकार प्राप्त हुआ।

(8) सिंधिया एक प्रमुख .... सरदार था।

(9) भारत में कम्पनी ने .... के सिद्धान्त का पालन किया था।

(10) दीवानी अदालत का प्रधान जिला .... होता था।

(11) .... में एक सर्वोच्च न्यायालय की स्थापना की गई थी।

(12) भारतीय जिले में .... सबसे बड़ा ओहदा होता था।

© JCERT not to be republished

(ग) कॉलम 'अ' से कालॅम 'व' का सही मिलान करें—

(1)	बक्सर का युद्ध	(क) 1757
(2)	प्लासी का युद्ध	(ख) 1764
(3)	अवध का कम्पनी में विलय	(ग) 1775-82
(4)	प्रथम आंग्ल-मराठा युद्ध	(घ) 1856

(ड.) अतिलघु उत्तरीय प्रश्न—

(1) ईस्ट इंडिया कम्पनी का स्थापना कब हुई ?

(2) किन भारतीय वस्तुओं की माँग यूरोपीय बाजार में अधिक थी ?

(3) फैक्ट्री क्या होती थी ?

(4) दस्तक क्या थी ?

(5) अलीवर्दी खान की मृत्यु के बाद कौन बंगाल का नवाब बना ?

(6) प्लासी का युद्ध कब हुआ ?

(7) बक्सर का युद्ध किनके मध्य हुआ था ?

(8) बक्सर का युद्ध निर्णायक क्यों था ?

(9) सहायक संधि का संस्थापक कौन था ?

(10) सर्वोच्च न्यायालय की स्थापना कहाँ की गई थी ?

लघु उत्तरीय प्रश्न—

(1) प्लासी के युद्ध के क्या कारण थे ?

(2) प्लासी के युद्ध के क्या परिणाम हुए ?

(3) बक्सर के युद्ध के क्या कारण थे ?

(4) हैस्टिंग्स द्वारा किए गए न्याय संबंधी सुधार क्या थे ?

उत्तर—

(क)—(1) ख, (2) घ, (3) ख, (4) घ, (5) ग, (6) घ, (7) क, (8) ख, (9) ख, (10) ख।

(ख)—(1) व्यापारी, (2) व्यापारिक, (3) फरमाना (आज्ञापत्र), (4) मीरकासिम, (5) सूतानाती, (6) निर्णायक, (7) इलाहाबाद, (8) मराठा, (9) सर्वोच्चता, (10) कलेक्टर, (11) कलकत्ता, (12) कलेक्टर।

(ग)—(1) ख, (2) क, (3) घ, (4) ग,

© JCERT not to be republished